YouTube
@ Shram Shikhar Channel को Subscribe और Share करें

साप्ताहिक समाचार–पत्र

# श्रम शिखर

जन–जन के विकास, आनन्द को समर्पित...
स्थापित: 1981

डाक पंजीकरण संख्या: MT- 153-2022-24 RNI NO. UPHIN/2009/31760

श्री कृष्ण भवन (गली प्याऊ वाली), 283/1, वैस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ website:www.shramshikhar.in e-mail : shramshikhar@gmail.com

स्वयं का विकास ! देश का विकास ! समृद्ध मानवता !

यूट्यूब/श्रम शिखर पर कार्यक्रम

वर्ष 16 अंक 03 सोमवार, 15 जनवरी से 21 जनवरी, 2024 पृष्ठ 4 मूल्य ₹ 8/-

## महा योजना 2031 का महत्वपूर्ण हिस्सा परतापुर मोहिउद्दीन बिजली उपेक्षित कब तक

मेरठ महा योजना 2031 का एक हिस्सा परतापुर से मो. हिउद्दीनपुर बनने जा रहा है। इस क्षेत्र में दो औद्योगिक क्षेत्र है तथा हवाई अड्डा बनने की ओर है। रेलवे कोरिडोर बन रहा है जहां से कलकत्ता तक माल ढुलाई ट्रेने गुजरेगी। नमो रैपिड शुरू होनपे को है इसका स्टेशन शताब्दी नगर है मैट्रो चलने वाली है। इसके बावजूद इस क्षेत्र का अधिशासी अभियंता बिजली वितरण खण्ड एक क्षेत्र में न होकर इस क्षेत्र से 20 से 22 कि0मी0 दूर विक्टोरिया पार्क में ही बना हुआ है। महायोजना 2031 में सबसे पहले बिजली सड़क कार्य ही होने है इस कारण बिजली दफ्तर क्षेत्र मे होना जरूरी है। परतापुर, मोहिउद्दीनपुर आदि क्षेत्र के उद्यमी एवं किसान तथा आम नागरिक इस खण्ड कार्यालय के इसके अन्तर्गत के क्षेत्र परतापुर, हस्तातरित करने की मांग एक से अधिक बार कर चुके है। बिजली महकमें के जिम्मेदार इसे इस सरकार में ही नहीं इसमें पूर्व की सरकार में की अनसूना करते रहे है।

गत दिनों एक बार फिर परतापुर व उद्योगपुरम आदि क्षेत्र के उद्यमी संगठनों ने प्रबंध निदेशक पश्चिमांचल को पत्र लिखकर विद्युत वितरण खण्ड प्रथम (ग्रामीण) को इसके अर्न्तगत के क्षेत्र परतापुर हस्तांतरित करने की मांग कर चुके है। इस पर किसी तरह की कार्यवाही न कर इसे ठंडे बस्ते में डाले जाने का समाचार है।

क्षेत्र विधायक बिजली राज्यमंत्री तब भी

परतापुर मोहिउद्दीनपुर क्षेत्र के मेरठ दक्षिण के विधायक उ0प्र0 मंत्री मण्डल में राज्यमंत्री ऊर्जा है इसके बावजूद बिजली का यह कार्यालय परतापुर क्षेत्र में न आना बल्कि मांक को अनसूना करना तथा उपभोक्ताओं को शहर के व्यस्त एवं जामयुक्त रास्ते से लम्बाा समय बर्बाद कर इस कार्यालय में अपने बिजली कार्यो हेतु जाना होता है इसमें समय की बर्बादी के साथ अनावश्य आने जाने में खर्चा करना होता है।

क्षेत्र के किसान प्रतिनिधियों व उद्यमियों का कहना है कि फर्जा राज्यमंत्री ने मंत्री पद लेने के बाद इस खण्ड कार्यालय को ही क्षेत्र में हस्तांतरित कराने की बात नहीं कही थी बल्कि बिजली प्रशासन को अधिकाधिक उपभोक्ता निकट पहुंचाने की सरकार की नीति अर्न्तगत सरधना व किठौर क्षेत्रों के खण्ड कार्यालय व अन्य खण्ड या उपखण्ड कार्यालय जो अपने क्षेत्रों में नहीं है उन्हें उनके क्षेत्रों में ही रखवाने की बात कही थी। एक वर्ष व्यतीत होने को है पर इस आश्वासन पर भी हलचल नहीं जनता व उपभोक्ता की मांग सुनने की बात तो दूर की बात है।

उपभोक्ता के निकट आने का लाभ फोन सम्पर्क से राजस्व वसूली में दिखा

बिजली विभाग ने उपभोक्ता के निकट आने का परिणाम इस वर्ष अध्यक्ष पावर कारपेरेशन डा0 आशीष गोयल की फोन से उपभोक्ता सम्पर्क कर बिल भुगतान हेतु सम्पर्क पहल का परिणाम विभाग महसूस कर रहा है। रिकार्ड राजस्व वसूली हो पा रही है। बिजली प्रशासन प्रबंध भी अधिकाधिक उपभोक्ता के निकट उनके क्षेत्र में कार्य करेगे खण्ड व उपखण्ड होगे निश्चय ही राजस्व वसूली ही नहीं बिजली की समस्याएं कम होगी बेहतर बिजली व्यवस्था बनेगी।

संयुक्त व्यापार समिति महामंत्री विपुल सिंहल का कहना है कि उ0प्र0 सरकार द्वारा 15 नये जोनल बिजली के कार्यालय खोलना भी उपभोक्ता की अधिकाधिक सुनवाई व बिजली की व्यवस्था को अधिकाधिक निकट से निगरानी कराने की नीतिर्न्तगत है इस पर भी बिजली के खण्ड व उपखण्ड कार्यालय अपने अपने क्षेत्रों में न होना निश्चय ही चन्द सार का नीजि स्वार्थ दिखता है जो कि होना नहीं चाहिए। आईआईए के जिम्मेदार प्रतिनिधियों का कहना है कि उ0प्र0 पावर कारपोरेशन अध्यक्ष मेरठ के पश्चिमांचल विद्युत वितरण निगम के वर्ष 2011 में प्रबंध निदेशक रह चुके है उपके द्वारा तब भी आश्वस्त किया था कि परतापुर क्षेत्र को उनका खण्ड कार्यालय उनके क्षेत्र भेजा जाएगा। उन्हें इस की याद कराते अब इस वायदे को पूरा करने की मांग की गई है।

श्रम ब्यूरो

## स्थानीय निकाय–जिला परिषद सदस्य हेतु व्यवस्था ही समय समय पर वह चल अचल सम्पत्ति घोषित करें

मेरठ सहित उ0प्र0 में स्थानीय निकायों व जिला परिषदों में ट्रिपिल इंजन सरकारें है। स्थानीय निकायों व जिला परिषदों में करोड़ो के कार्य इन निकायों व परिषदों के वार्डो में हो रहे है, होते हहै इनकी निगरानी व कार्य संतोषजनक करार देने में वार्ड प्रतिनिधि यानि पार्षद या सचांयत सदस्य की महत्वपूर्ण होती है।

संसद, विधानसभाओं के चुनाव हेतु नामांकन के समय सम्पत्ति का विवरण व अपराधिक मुकदमें हाने न होने, शिक्षा आदि विवरण देने होते है पर हमारी जानकारी अनुसार कोई सरकारी देय बकाया न होने के प्रमाण पत्र के अलावा अन्य विवरण या सम्पत्ति का ब्यौरा स्थानीय निकाय, जिला परिषद आदि चुनाव के प्रत्याशी को नहीं देना होता है।

प्राय देखने एवं सुनने में आता रहता है कि स्थानीय निकाय प्रति. निधि हो या जिला परिषद सदस्य अधिकांश एक समय अवधि में ही अपनी हैसियत कई गुणा बढ़ा लेते है एवं उनके सगे संबंधी व अवसर का लाभ उठाने वाले चम्चें तक लाभान्वित होते है। अधिकांश वार्डो में कार्य प्रतिनिधि अपने परिवार सदस्य या रिश्ते संबंधी या फिर मिलने वाले या फिर पार्टी की चिल्म भरने वालों को ही मिलते है।

प्रायः देखने में आता रहा है कि निकाय व जिला परिषद के निर्माण कार्य या खरीद फरोश में नियम कायदें खुटी पर टगें मिलते है।

प्रदेश के मुख्यमंत्री वर्तमान में एक से अधिक बार इन स्तर के कार्यो की गुणवत्ता के अलावा ठेके में भाई भतीजे या दोस्ती या पार्टी के बल से दूर होकर पारदर्शिता के लिए चेताते रहते है परन्तु इस चेताने का असर शायद ही कही देखने को मिलता है।

स्थानीय निकाय– जिला परिषद सदस्य समय समय पर चल अचल सम्पत्ति...

सदभावना समिति वरिष्ठ नागरिक फोरम ने अपेक्षा की है कि प्रदेश चुनाव आयोग व सरकार स्थानीय निकाय व जिला परिषद स्तर के सदस्यों के चुनाव नामांकन लोकसभा– विधानसभा के लिए नामांकन की भांति चल अचल सम्पत्ति व अन्य घोषणाएं कराने के साथ सभी जन प्रतिनिधियों को देश व प्रदेश की भष्टाचार के प्रति शुन्य टालरेन्स नीति तहत हर वर्ष सम्पत्ति आय के साथ क्षेत्र में कराये जाने वाले अपनी सरकारी नीधि आदि के कार्य में स्वंय या परिवार या फिर संगे संबंधी या मित्र या फिर पार्टी सदस्य का संबंध नहीं है घोषणा करें।

विश्वास तो नहीं यह व्यवस्था बनेगी पर इस व्यवस्था को बनवाने की जन अपेक्षा हेतु जन जाग्रति श्रम शिखर भी करता रहेगा। ऐसा विश्वास सदभावना समिति वरिष्ट नागरिक फोरम ने की है।

श्रम ब्यूरो

## रासायनिक खादों के अधिक खेती में इस्तमाल पर चिंता

विश्व मृदा दिवस पर फसल चक्र नहीं अपनाएं जाने व रासायनिक खाद का अत्यधिक इस्तमाल करने से मिट्टी की सेहत लगातार खराब हो रही है। यह कहना है कृषि विभाग की मेरठ स्थित क्षेत्रीय मृदा प्रयोगशाला द्वारा लिए गए नमूनों के परीक्षण के बाद कहा गया कि जमीन के अंदर आर्गेनिक कार्बन निम्न स्तर पर पहुंच गया है। इससे जमीन की जलधारण क्षमता घट रही है। इसके साथ ही भूमि को शत प्रतिशत पोषक तत्व भी फसल को नहीं मिल रहे है।

किसान फसल उत्पादन बढाने की होड़ में रासायनिक खादों का अंधाधुंध इस्तमाल कर रहे है। यह ही कारण है कि अब बिना रसायनिक खाद के जमीन में कोई फसल पैदा नहीं हो रही है। मेरठ जिले में ही खाद की रकबे के हिसाब से कही ज्यादा रसायनिक खाद इस्तमाल की जा रही है। गत वर्ष ही 1 लाख 70 हजार मीट्रिक टन रसायनिक खाद इस्तमाल की गई।

प्रत्येक वर्ष 5 दिसम्बर को विश्व मिट्टी दिवस यानि की विश्व मृदा दिवस उपजाउ मिट्टी बचाओं यानि की उपजाउ खेती की मिट्टी के प्रति जागरूकता के लिए इस दिवस मंथन व जागरूकता के प्रयास कार्यशाला आदि से होते है। वास्तव में यह प्रयास वर्ष भर होने रहने चाहिए। इसके साथ ही रसायनिक खादों के अधिक इस्तमाल पर चिंता व्यक्त करने तक प्रयासों की इति श्री प्रत्येक वर्ष होना कुछ इस तरह है जैसे की मि मध एवं नशा उन्मूलन प्रयास का दिखावा करते है।

एक ओर शराब व नशा न करने व इसके प्रति मघ निषेघ विभाग बनाकर उसके माध्यम से लोगों को शराब व अन्य नशे से दूर रखाने की बात करते है दूसरी ओर शराब व अन्य नशा पदार्थों से राजस्व पाने के लिए शराब व नशा मंत्रालय बनाये है। शराब, तम्बाकू व अन्य नशे का उत्पाद कराते है दूसरी ओर इनके सेवन न करने की बात होती है।

इस तरह ही रसायनिक खाद खेती व इंसानों के स्वास्थ्य के लिए हानिक. ारक होने की बात कर किसानों से इसके इस्तमाल न करने व जमीन की उर्वकता व जलधारण क्षमता न घटने देने की अपेक्षा करते है इसके विपरीत उर्वरक खादों के अधिकाधिक इस्तमाल हेतु उसके लिए किसानों को इस खाद पर सब्सिडी देते है।

इसके विपरीत गोबर खाद इस्तमाल करने की किसान से अपेक्षा तो करते है पर गोबर खाद किसान बनाये इसके लिए अपेक्षित भूमि की उपलब्धता कराने का प्रयास नही करते है। ग्रामों, नगरों में गोबर व कूड़े से तैयार होने वाली खादद के लिए उपलब्ध रहने वाली सार्वजिक भूमि को ऐसे गायब करा दिया जैसे तलाब, पशु विचरण स्थल व अन्य सार्वजनिक भूमि को गायब करा दिया पट्टे या अवैध कब्जों को प्रोत्साहित कराकर।

गोबर–कूड़ा खाद उत्पाद बिक्री करे रसायनिक खाद उत्पाद की भांति प्रोत्साहित

श्रम शिखर इससे पूर्व भी अपेक्षा कर चुका है कि किसान व बागवानी आदि में गोबर व कूड़ा करकर खाद का पहले समय की भांति इस्तमाल के लिए प्रोत्साहित रसायनिक खाद उत्पाद, उसके वितरण व इस्तमाल के प्रोत्साहन हेतु सब्सिडी आदि की भांति कराया जाए तो इससे दूध न देने विशेष रूप से नर पशु जिसमें गौवंश भी है के पालन में आने वाली आर्थिक कठिनाई का समाधान होने, पशुओं का निराश्रित छोडने पर अंकुश के अलावा उत्पादित फसल अनाज, फल, सब्जी आदि में खुश्कपन के स्थान पर लोच व पाचन के दृष्टिगत स्वास्थ्यवर्धकता बन सकेगी।

इच्छाओं और जरूरतों का समाधान
हिन्दी साप्ताहिक श्रम शिखर CITY CLASSIFIED MEERUT
www. shramshikhar.in, shramshikhar@gmail.com
BUSINESS
व्यापार परिचय :– व्यापारिक विज्ञापन हेतु आवश्यकता/ उपलब्धता

# सम्पादकीय

## केरल के मुख्यमंत्री का राज्य के राज्यपाल पर आरोप बेहतर है हम अपने में झांके–जनता सब जानती है

केरल के मुख्यमंत्री पिनराई विजयन द्वारा गद्य जो अपने प्रदेश के राज्यपाल आरिफ मोहम्मद खान को आरोपित किया कि वह जानबूझकर भड़काओ बयान देकर राज्य की शांति को जानबूझकर भंग करने का प्रयास करने में लगे हैं।

मुख्यमंत्री द्वारा प्रदेश के राज्यपाल पर यह आप राज्य सरकार के एक जन संपर्क कार्यक्रम नव केरल सदास के हिस्से के रूप में आयोजित कार्यक्रम में लगाया। इससे पूर्व राज्यपाल द्वारा स्टूडेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया कार्यकर्ताओं को अपराधी कहा था। इस पर एक प्रश्न का उत्तर देते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्यपाल इस अवस्था में पहुंच गए हैं कि वह जो मन में आता है कह देते हैं। उनका कहना था कि वह भूल रहे हैं कि वह केरल के राज्यपाल हैं।

मुख्यमंत्री का कहना था कि वह जानबूझकर अपने कृतियों के माध्यम से राज्य की शांति को भंग करने की कोशिश कर रहे हैं। राज्यपाल के बाद के कृतियों से भी साबित होता है।

राज्यपाल व मुख्यमंत्री का यह टकराव एकमात्र नहीं इससे पूर्व वह एक से अधिक बार टकराव कर चुके हैं तथा सुप्रीम कोर्ट तक भी आ चुके हैं।

राज्यपाल एवं प्रदेश की वह सरकारी जो केंद्र में पदारू भारतीय जनता पार्टी व उनके समर्थक दलों से विभिन्न की प्रदेशों की पाड़ा रोड है में अधिकांश में राज्यपाल व मुख्यमंत्री में टकराव इस स्थिति में चल रहे हैं कि एक से अधिक ऐसी सरकारी सर्वोच्च न्यायालय में इन टकराव को लेकर या विधानसभाओं से पारित कानून के प्रस्ताव के राज्यपाल के पास लंबित रहने या दिल्ली में उपराज्यपाल व दिल्ली सरकार के बीच अधिकारियों को लेकर टकराव उत्तम न्यायालय स्तर पर आए दिन सुर्खियां पाए रहते है।

राज्यपाल देश के राष्ट्रपति के वैधानिक प्रतिनिधि होते हैं। जिस तरह भारत सरकार का वैधानिक सर्वोच्च राष्ट्रपति होते हैं उनके पद से भारत सरकार चलती है ऐसे ही स्टार राज्यों में अप राज्यों में राज्यपाल का स्तर व अधिकार होता है।

देश की आजादी के बाद लंबे अंतराल तक देश में कांग्रेस का शासन प्रदेशों तक रहा। उनके अपनी पसंद के उनमें भी अधिकांश पार्टी के सदस्य या विचारधारा की राज्यपाल पद सुशोभित करते रहे। एक दलीय केंद्र व राज्य में सत्ता होने से टकराव नहीं हुए परंतु जब गैर कांग्रेस सत्ता में आने लगे और राज्यपालों की नियुक्ति की व्यवस्था कांग्रेसी परंपरा की ही रही तो राज्यपाल व प्रदेश सरक. ारों में टकराव होने लगे।

एक समय था जब सरकारों में राजनीतिक दलों की नागरिकों को विशेष रूप से मतदाताओं में अपने आचरण व कार्यों से विश्वास पाया जाता था। कांग्रेस के सत्ता से दूर होने के बाद से लगभग सभी राजनीतिक दल एक दूसरे की चीता काशी कर कर मतदाता वह जनता को भ्रमित करते सत्ता पाने की फिराक में दिखाते हैं। इस कार्य में कांग्रेसी परंपरा अनुसार पार्टी के अधिकांश बुजुर्ग नेताओं वी विश्वासपात्र नौकरशाही या सैन्य आदि को यह राज्यपाल पादरा वफादारी से मिलते हैं तथा वहां अन्य दल की सरकार है तो वह सरकार अपनी नीतियों में ना जाकर आरोप प्रत्यारोप केवल पर प्रदेश जनता की अनुभूति प्रकार सट्टा का मेल जोड़ एक दूसरे पर डालने की प्रवृत्ति बढ़ रही है।

केरल के मुख्यमंत्री का अपने प्रदेश के राज्यपाल के प्रति शांति भंग करने का जानबूझ का आप निश्चय ही गैर जिम्मेदाराना व राजनीति से प्रेरित है।

चिंता का एक बड़ा कारण यह भी है कि इस तरह वह दिन दूर नहीं जब की राष्ट्रपति को भी इस स्तर पर ना ला दिया जाए। उसका न्यायालय का चुका है कि राज्यपाल उपराज्यपाल व प्रदेशों की सरकारें आपस में संवाद बढ़कर आपसी गलतफहमियां दूर करें। राज्यपाल स्तर पर विधानसभाओं से पारित प्रस्तावों को अपने पास अधिक समय रोके रखना भी उचित नहीं है।

सद्भावना समिति वरिष्ठ नागरिक फोरम एवं श्रम शिखर के प्रभु पाठक गण का मत है कि सत्ता दल को भी चाहिए कि राज्यपाल पूर्व नौकरशाह वह अपनी पार्टी के बुजुर्ग तथा कार्यकर्ताओं को इस पद पर सुशोभित करने के स्थान पर विद्युत निष्पक्ष में गैर राजनीतिक सर्वमान्य को इन पदों पर नियुक्त किया जाए।

देश के राष्ट्रपति अधिकार थे सम्मान के पात्र गैर विवादित व्यक्तित्व रहे हैं ऐसे में राज्यपाल के पत्र की गरिमा उन पर आस. ींद गैर राजनीतिक को सुशोभित कराकर इस पद की गरिमा भी देश के अन्य संवैधानिक पदों की गरिमा अनुरूप बनाया जाए।

राज्यपाल पद ही नहीं अब तो देश के चुनाव कराने वाले चुनाव आयोग के सदस्यों व उनके चयन पर ही उंगली उठ खड़ी हुई है। देश आजादी के 75 वर्ष पूरे कर चुका है अब देश की जनता परिपथ हो चुकी है यह इन्होंने देश व प्रदेशों में बहुमत की सरकारों का दौर पुणे देश में लाकर देश की राजनीतिक व विकास की सशक्त रहा चलने चलाने की प्रेरक पहचान दी है। देश का मतदाता समझता है क्या सही व क्या गलत है। केरल के राज्यपाल ठीक है या मुख्यमंत्री। दिल्ली के मुख्यमंत्री ठीक है या उपराज्यपाल। पंजाब हो या अन्य गैर भाजपा शासित राज्य।

देश की जनता प्रदेशों के राज्यपालों चुनाव आयोग सदस्यों या अन्य संवैधानिक पदों का चयन के चयन की प्रक्रिया व पात्रता सब देख रही है जान रही है। गलत सही का मत देकर देर से ही जवाब तो दे रही है। बेहतर हो देश व प्रदेश की जनता को अपनी अमर्यादित आचरण से भ्रमित कर अपनी औकात जग जाहिर न करें। राज्यपाल प्रदेश की वह सरकारी जो राज्यपालों पर उंगलियां उठती है एक दूसरे पर नहीं खुद को आत्म साध्य करें। कॉल शांति भंग करने में लगा है कौन है जो अपने दायित्व से विचलित होने में लगा है। जनता सब जानती है। यह चचा लीटर दूसरे का नहीं खुद का ही आहट अधिक करने वाली है। राज्यपाल उप राज्यपाल व प्रदेश के मुख्यमंत्री सभी सम्मानित है। 5 वर्ष में तो जनता अदालत जाना है फिर ऐसा ना करो कि बाद में अपने कृत्य के लिए शर्मिंदा होना पड़े।

सबक है छत्तीसगढ़ जहां भारतीय जनता पार्टी के पूर्व मुख्यमंत्री के विधानसभा अध्यक्ष पद का नामांकन पक्ष व विपक्ष द्वारा मिलकर कराया गया। विधानसभा अध्यक्ष की कुर्सी भी निष्पक्षता की है यह भी कहीं महाराष्ट्र के विधानसभा अध्यक्ष की भांति तेरा मेरा में ना प्रश्न चिन्ह खड़े करें। राज्यपाल का पद हो या अन्य संवैधानिक पद इन पर अरुण होते ही अपने खुद की विचारधारा राजनीतिक दल के प्रति जवाब दहिया अपनी जात–पात परिवार सब छूट कर एक ही कम रहता है कुर्सी के प्रति निष्ठा।

# हमारी शिक्षा पद्धति

पिछली अर्धशताब्दी के अन्तराल में शिक्षा के प्रचार प्रसार में आशातीत उन्नति हुई है. इलेक्ट्रोनिक मीडिया अर्थात टी.वी. एवं इंटरनेट के विकास ने शिक्षा जगत को पंख लगा दिए हैं.परन्तु हमारी शिक्षा पद्धति, शिक्षा के मुख्य उद्देश्य से कहीं भटक गयी है.शिक्षा का अर्थ सिर्फ रोजगार पा लेने की क्षमता विकसित करा देना अथवा किसी विषय में पारंगत हो जाना ही नहीं है,शिक्षा का का उद्देश्य मात्र देश दुनिया की जानकारी प्राप्त कर लेना भर नहीं है या भाषा का विद्वान् हो जाना नहीं है.शिक्षा का मकसद सभ्य समाज का निर्माण करना बच्चों का चरित्र निर्माण करना भी है, और उन्हें स्वस्थ्य जीवन व्यतीत करने के लिए राह दिखाना भी होता है.जो हमारे पाठ्यक्रमों में लुप्त प्राय रहता है. हमारी शिक्षा पद्धति में कुछ कमियां निम्न प्रकार हैय

१,,गडित, एवं भाषा जैसे अनेक विषय शामिल रहते हैं. परन्तु बच्चों को जीवन भर स्वस्थ्य रहने की जानकारी देने का अभाव रहता है,उन्हें नैतिक ज्ञान जैसे महत्वपूर्ण विषय से अनभिज्ञ रखा जाता है.जो उनके चरित्र निर्माण में सहायक हो सके।

२,बच्चे को उसकी रूचि के अनुसार ससभविष्य निर्माण के अवसर नहीं दिए जाते , अक्सर अभिभावकों द्वारा थोपे गए उद्देश्यों के लिए उसे जूझना पड़ता है,विद्यार्थी की सफलता के लिए उसकी रूचि ,उसकी क्षमताओं का आंकलन कर शिक्षा के विषय चुनना आवश्यक है जो सिर्फ मनोवैज्ञानिक की सलाह द्वारा ही संभव है.

३,आधुनिक चकाचौंध के युग में टी.वी. जैसे इलेक्ट्रोनिक माध्यमों से प्रेरित हो कर आज का किशोर अपने सपनों की दुनिया में विचरने लगता है,वह उच्च जीवन शैली से प्रभावित होकर जीने लगता है.परन्तु स्वप्न पूरे न होने पर अवसाद ग्रस्त या कुंठित होने लगता है. अतः उसे जीवन की हकीकत,उसकी अपनी क्षमता,उसकी अपनी परिस्थति से अवगत कराना आवश्यक है,ताकि वह अपने सपने अपनी योग्यतानुसार बुने और उन्हें पूर्ण करने के लिए आवश्यक प्रयास करे. ताकि वह अपने जीवन में सफलता पा सके न की निराशा. उचित मार्गदर्शन उसके भविष्य को संवार सकता है।

४,आज का शिक्षक वर्ग अपने समाज सेवा के मूल कर्तव्य से भटक गया है ,उसे ट्यूशन द्वारा धन अर्जन करना ही अपने जीवन का उद्देश्य दिखाई देता है.

५,अनेकों अवांछनीय तत्व एवं नकल माफिया सक्रीय हो गए हैं जो विद्यार्थियों को नकल करने से लेकर नकली डिग्रियां उपलब्ध कराने के समाज विरोधी कार्य में संलंग्न हैं,और हमारी शिक्षा प्रणाली का मजाक उड़ा रहे हैं. सख्त एवं पारदर्शी परीक्षा व्यवस्था द्वारा ही उन्हें हतोत्साहित किया जा सकता है.और विद्यार्थी की योग्यता का लाभ देश को मिल सकता है।

सत्य शील अग्रवाल मेरठ

### सूचना

बच्चे की जन्म सूचना में त्रुटिवश बच्चे का नाम KUSHAGRA GARG, माता का नाम DIMPAL, पिता का नाम NEERAJ GARG लिखा गया है, जबकि वास्तविक नाम हाईस्कूल प्रमाणपत्र के आधार पर UTKARSH माता का नाम DIMPAL GUPTA पिता का नाम NEERAJ KUMAR है, कृपया जन्मप्रमाण पत्र में सही किया जाए।

सकारात्मक–सूचनात्मक उपयोगी समाचार प्रथम प्रकाशन 2 अक्टूबर 1981 **E-Paper: shramshiikhar.com**
केन्द्र सरकार, राज्य सरकार, उत्तर प्रदेश विद्युत विभाग एवं भारतीय रेलवे से विज्ञापनों हेतु स्वीकृत
डाक- पंजीकरण संख्या–मेरठ
**153-2022-2024 RNI No. UPHIN/2009/31760**
साप्ताहिक अखबार श्रम शिखर
श्रीकृष्ण भवन (लेन अपोजिट शिव लोक कॉम्पलैक्स), 283/1, वैस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ। फोन नं0 **Whatsapp No. 9219660359**

प्रधान सम्पादकः सुनीता रानी 9897373736
प्रबंधकः राकेश गुप्ता 9219660359
बिक्री प्रबंधकः अश्विनी गुप्ता 9358402365
इंटरनेट प्रबंधकः मेघा अग्रवाल 9219660359
संरक्षक : ब्रज भूषण 9457213164
कानूनी सलाहकार : दिनेश कुमार चतुर्वेदी एडवोकेट : 0121–2760145, 09720171549
मार्केटिंग टीम : 9219660359, 9411990449
उ0प्र0 ब्यूरोचीफः अभिलाष गुप्ता 9412203620
प्रभारी दिल्लीः मंजरी गुप्ता, 42 अनामिका एपार्टमेंट इन्द्रप्रस्थ विस्तार पटपडगंज नई दिल्ली–92

### श्रम शिखर कार्यालय

**मेरठ**- श्रीकृष्ण भवन, 283, वैस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ। (0121-2641338), **सद्भावना**- 68 ए साईंपुरम्, दिल्ली रोड, मेरठ। (9219660359), **उत्तराखण्ड**- श्री राजेश कुमार गुप्ता, श्री ओम वैष्णव भोजनालय, 78 गांधी रोड, देहरादून (9411548998), गाजियाबाद। (09540018282), अमित कुमार, 705 सी टावर, सातवां तल, जी०एच० 1/1, सैक्टर-01, ग्रीन एक्सप्रेस, वैशाली गाजियाबाद, उ०प्र० (09560115905) **दिल्ली**- राखी मित्तल- **एफ–1, त्रवेणी काम्पलेक्स शेख सराय फेस–1 न्यू दिल्ली–110017 मो0 9868511922 हरियाणा**- राखी मित्तल, रीचमण्ड पार्क, डीएलएफ, फेस-4, गुडगांव हरियाणा। **मो0 9868511922 मुजफ्फरनगर**- विजय बुक स्टोर, मेन रोड, गांधी कालोनी, मुजफ्फरनगर। फोनः 9897185208, 9152911899 **दिल्ली-Ankit Sisodia** GF-89, kailash Hills, East of Kailash New Delhi-110065, **श्रीमती रंजीता गर्ग, बी–120,** शॉप नं0 5, पांडव नगर दिल्ली–92 **मो0 9911808555,** लखनऊ- अजय श्रीवास्तव, 3/20, विकास नगर लखनऊ। फोनः 9335208218, **मुम्बई–अचल गुप्ता, बी 1603 सनटैक सिटी गोरेगांव वेस्ट 9920939916, सरधना– महेश गुप्ता, न्यूज पेपर एजेन्ट मोहल्ला–गुजरान, सरधना, मेरठ। हैदराबाद– श्रीमति नेहा गोयल फ्लैट नं0 1207 गो–मेड ब्लॉक 'माई होम जैवल' मदीनागुड़ा हैदराबाद– 500049**

डाक पंजीकरण संख्या-मेरठ-**153-2022-24 RNI No. UPHIN/2009/31760** मालिक, प्रकाशक, मीना भूषण ने मुद्रक अभिषेक प्रिंटर्स, पी. एल. शर्मा रोड, मेरठ से मुद्रित कराकर श्रीकृष्ण भवन, गली अपोजिट शिवलोक कॉम्पलैक्स, 229, वैस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ से प्रकाशित किया। सम्पादकः सुनीता रानी

इच्छाओं और जरूरतों का समाधान
हिन्दी साप्ताहिक श्रम शिखर CITY CLASSIFIED MEERUT
www.shramshikhar.in, shramshikhar@gmail.com

EDUCATION
शिक्षा कार्य:– शिक्षा संबंधित जानकारियों और विभिन्न कोर्सों के विज्ञापन हेतु आवश्यकता/उपलब्धता

# प्रकृति की सब भूख प्यास कमी से पैदा होती है

शरीर में पानी की कमी है तो प्यास पैदा होती है। शरीर में भोजन की कमी है तो भूख पैदा होती है। शरीर में वीर्य ऊर्जा ज्यादा इकट्ठी हो गयी तो कामवासना पैदा होती है। फेंको उसे बाहर। उलीचो उसे फेंक दो उसे खाली हो जाओ ताकि भर सको।

शरीर दो तरह की जरूरतें है भरने की और निकालने की। जो चीज नहीं है उसे भरों जो ज्यादा है उसे निकालों। यह शरी की कुल दुनियां है। वीर्य भी एक मल है। जब ज्यादा हो जाये तो उसे फेंक दो बाहर,नहीं तो वि बोझिल करेगा। सिर को भारी करेगा।

ये जो दो जरूरतें है जब कमी हो तो भरों, जब ज्यादा हो तो निकालों। इसलिए दुनिया में इतनी कामवासना दिखाई देती है। उसका कारण यह है कि भरने की जरूरत काफी दूर तक लोगों की पूरी हो गयी है। निकालने की जरूरत बढ़ गई है। भूखा आदमी है, गरीब आदमी है मकान नहीं कपड़ा नहीं है, प्रतिपल भरने की चिंता है, तो निकालने की चिंता का सवाल नहीं उठता। इसलिए आज अगर अमरीका में एकदम कामुकता है तो उसका कारण आप यह मत समझना की अमरीका अनैतिक हो गया है। जिस दिन आप भी इतना समृद्धि में होंगे, इतनी की कामुकता इस देश में भी होगी। क्योंकि जब भरने का काम पूरा हो गया तो अब निकलने का ही काम बचा। जब भोजन की कोई जरूरत नहीं रह तो संभोग की ही, सेक्स की ही जरूरत रह जाती है। और कोई जरूरत बची नहीं।

भोजन भरना है संभोगनिकलना है। तो भोजन ज्यादा होगा तो तकलीफ शुरू होगी। इसलिए सभी सभ्यताएं जब भोजन की जरूरत पूरा कर लेती है तब कामुक हो जाती है। इसलिए हम बड़े हैरान होते है कि समृद्ध लोग अनैतिक क्यों हो जाते है। गरीब आदमी सोचता है हम बड़े नैतिक है। अपनी पत्नी से तृप्त है। ये बड़े आदमी समृद्ध आदमी तृप्त नहीं होते,शांत क्यों नहीं होते, ये क्यों भागते रहते है।

यह जो स्थिति है, यह तो प्रकृ ति गत है। धर्म कहां से शुरू होगा है? धर्म वहां से शुरू होता है जहां भरना भी व्यर्थ हो गया। निकालना भी व्यर्थ हो गया। जहां दुःख तो व्यर्थ हो ही गया। सुख भी व्यर्थ हो गया। जहां प्रकृति व्यर्थ मालूम होने लगी।

महावीर वाणी
ओशो

# द्वारिकाधीश का तुलादान

एक बार देवर्षि नारद के मन में आया कि भगवान् के पास बहुत महल आदि है है, एक– आध हमको भी दे दें तो यहीं आराम से टिक जायें, नहीं तो इधर –उधर घूमते रहना पड़ता है ।

भगवान् के द्वारिका में बहुत महल थे।

नारद जी ने भगवान् से कहा – ष भगवन ! ष आपके बहुत महल हैं, एक हमको दो तो हम भी आराम से रहें। आपके यहाँ खाने – पीने का इंतजाम अच्छा ही है ।

भगवान् ने सोचा कि यह मेरा भक्त है , विरक्त संन्यासी है। अगर यह कहीं राजसी ठाठ में रहने लगा तो थोड़े दिन में ही इसकी सारी विरक्ति भक्ति निकल जायेगी ।

हम अगर सीधा ना करेंगे तो यह बुरा मान जायेगा , लड़ाई झगड़ा करेगा कि इतने महल हैं और एकमहल नहीं दे रहे हैं ।

भगवान् ने चतुराई से काम लिया , नारद से कहा जाकर देख ले , जिस मकान में जगह खाली मिले वही तेरे नाम कर देंगे । नारद जी वहाँ चले ।

भगवान् की तो १६१०८रानियाँ और प्रत्येक के११– ११बच्चे भी थे । यह द्वापर युग की बात है ।

सब जगह नारद जी घूम आये लेकिन कहीं एक कमरा भी खाली नहीं मिला , सब भरे हुए थे ।

आकर भगवान् से कहा वहाँ कोई जगह खाली नहीं मिली ।

भगवान् ने कहा फिर क्या करूँ होता तो तेरे को दे देता।

नारद जी के मन में आया कि यह तो भगवान् ने मेरे साथ धोखाधड़ी की है , नहीं तो कुछ न कुछ करके, किसी को इधर उधर शिफ्ट कराकर , खिसकाकर एक कमरा तो दे ही सकते थे ।

इन्होंने मेरे साथ धोखा किया है तो अब मैं भी इन्हे मजा चखाकर छोड़ूँगा ।

नारद जी रुक्मिणी जी के पास पहुँचे , रुक्मिणी जी ने नारद जी की आवभगत की , बड़े प्रेम से रखा।

उन दिनों भगवान् सत्यभामा जी के यहाँ रहते थे ।

एक आध दिन बीता तो नारद जी ने उनको दान की कथा सुनाई , सुनाने वाले स्वयं नारद जी।

दान का महत्त्व सुनाने लगे कि जिस चीज का दान करोगे वही चीज आगे तुम्हारे को मिलती है।

जब नारद जी ने देखा कि यह बात रुक्मिणी जी को जम गई है तो उनसे पूछा ष आपको सबसे ज्यादा प्यार किससे है ?

रुक्मिणी जी ने कहा यह भी कोई पूछने की बात है , भगवान् हरि से ही मेरा प्यार है ।

कहने लगे फिर आपकी यही इच्छा होगी कि अगले जन्म में तुम्हें वे ही मिलें।

रुक्मिणी जी बोली इच्छा तो यही है।

नारद जी ने कहा इच्छा है तो फिर दान करदो, नहीं तो नहीं मिलेंगे । आपकी सौतें भी बहुत है और उनमें से किसी ने पहले दान कर दिया उन्हें मिल जायेंगे।

इसलिये दूसरे करें इसके पहले आप ही करदे ।

.रुक्मिणी जी को बात जँच गई कि जन्म जन्म में भगवान् मिले तो दान कर देना चाहियें।

रुक्मिणी से नारद जी ने संकल्प करा लिया ।

अब क्या था , नारद जी का काम बन गया ।

वहाँ से सीधे सत्यभामा जी के महल में पहुँच गये और भगवान् से कहा कि उठाओ कमण्डलु , और चलो मेरे साथ।

भगवान् ने कहा कहाँ चलना है , बात क्या हुई ?

नारद जी ने कहा बात कुछ नहीं , आपको मैंने दान में ले लिया है । आपने एक कोठरी भी नहीं दी तो मैं अब आपको भी बाबा बनाकर पेड़ के नीचे सुलाउँगा। सारी बात कह सुनाई ।

भगवान् ने कहा रुक्मिणी ने दान कर दिया है तो ठीक है । वह पटरानी है , उससे मिल तो आयें ।

भगवान् ने अपने सारे गहने गाँठे , रेशम के कपड़े सब खोलकर सत्यभामा जी को दे दिये और बल्कल वस्त्र पहनकर, भस्मी लगाकर और कमण्डलु लेकर वहाँ से चल दिये ।

उन्हें देखते ही रुक्मिणी के होश उड़ गये । पूछा हुआ क्या ?

भगवान् ने कहा पता नहीं , नारद कहता है कि तूने मेरे को दान में दे दिया।

रुक्मिणी ने कहा लेकिन वे कपड़े , गहने कहाँ गये, उत्तम केसर को छोड़कर यह भस्मी क्यों लगा ली ?

भगवान् ने कहा जब दान दे दिया तो अब मैं उसका हो गया। इसलिये अब वे ठाठबाट नहीं चलेंगे। अब तो अपने भी बाबा जी होकर जा रहे हैं ।

रुक्मिणी ने कहा मैंने इसलिये थोड़े ही दिया था कि ये ले जायें।

भगवान् ने कहा और काहे के लिये दिया जाता है ? इसीलिये दिया जाता है कि जिसको दो वह ले जाये ।

अब रुक्मिणी को होश आया कि यह तो गड़बड़ मामला हो गया।

रुक्मिणी ने कहा नारद जी यह आपने मेरे से पहले नहीं कहा , अगले जन्म में तो मिलेंगे सो मिलेंगे , अब तो हाथ से ही खो रहे हैं ।

नारद जी ने कहा अब तो जो हो गया सो हो गया , अब मैं ले जाऊँगा । रुक्मिणी जी बहुत रोने लगी।

तब तक हल्ला गुल्ला मचा तो और सब रानियाँ भी वहा इकठ्ठी हो गई। सत्यभामा , जाम्बवती सब समझदार थीं।

उन्होंने कहा भगवान् एक रुक्मिणी के पति थोड़े ही हैं, इसलिये रुक्मिणी को सर्वथा दान करने का अधिकार नहीं हो सकता, हम लोगों का भी अधिकार है।

नारद जी ने सोचा यह तो घपला हो गया । कहने लगे क्या भगवान् के टुकड़े कराओगे ? तब तो 16108 हिस्से होंगे ।

रानियों ने कहा नारद जी कुछ ढंग की बात करो । नारद जी ने विचार किया कि अपने को तो महल ही चाहिये था और यही यह दे नहीं रहे थे , अब मौका ठीक है , समझौते पर बात आ रही है ।

नारद जी ने कहा भगवान् का जितना वजन है , उतने का तुला दान कर देने से भी दान मान लिया जाता है । तुलादान से देह का दान माना जाता है।

इसलिये भगवान् के वजन का सोना , हीरा , पन्ना दे दो । ष इस पर सब रानियाँ राजी हो गई।

बाकी तो सब राजी हो गये लेकिन भगवान् ने सोचा कि यह फिर मोह में पड़ रहा है । इसका महल का शौक नहीं गया।

भगवान् ने कहा तुलादान कर देना चाहिये , यह बात तो ठीक हे।

भगवान् तराजु के एक पलड़े के अन्दर बैठ गये । दूसरे पलड़े में सारे गहने, हीरे, पन्ने रखे जाने लगे।

लेकिन जो ब्रह्माण्ड को पेट में लेकर बैठा हो , उसे द्वारिका के धन से कहाँ पूरा होना है ।

सारा का सारा धन दूसरे पलड़े पर रख दिया लेकिन जिस पलड़े पर भगवान बैठे थे वह वैसा का वैसा नीचे लगा रहा , ऊपर नहीं हुआ ।

नारद जी ने कहा देख लो , तुला तो बराबर हो नहीं रहा है , अब मैं भगवान् को ले जाऊँगा ।.

सब कहने लगे अरे कोई उपाय बताओ ।

नारद जी ने कहा और कोई उपाय नहीं है ।.

अन्य सब लोगों ने भी अपने अपने हीरे पन्ने लाकर डाल दिये लेकिन उनसे क्या होना था । वे तो त्रिलोकी का भार लेकर बैठे थे ।

नारद जी ने सोचा अपने को अच्छा चेला मिल गया , बढ़िया काम हो गया। उधर औरते सब चीख रही थी।

नारद जी प्रसन्नता के मारे इधर ऊधर टहलने लगे । भगवान् ने धीरे से रुक्मिणी को बुलाया ।

रुक्मिणी ने कहा कुछ तो ढंग निकालिये , आप इतना भार लेकर बैठ गये , हम लोगों का क्या हाल होगा ?

भगवान् ने कहा ये सब हीरे पन्ने निकाल लो , नहीं तो बाबा जी मान नहीं रहे हैं ।

यह सब निकालकर तुलसी का एक पत्ता और सोने का एक छोटा सा टुकड़ा रख दो तो तुम लोगों का काम हो जायगा।

रुक्मिणी ने सबसे कहा कि यह नहीं हो रहा है तो सब सामान हटाओ ।

सारा सामान हटा दिया गया और एक छोटे से सोने के पतरे पर तुलसी का पता रखा गया तो भगवान् के वजन के बराबर हो गया।

सबने नारद जी से कहा ले जाओ तूला दान ।

नारद जी ने खुब हिलाडुलाकर देखा कि कहीं कोई डण्डी तो नहीं मार रहा है। नारद जी ने कहा इन्होंने फिर धोखा दिया । फिर जहाँ के तहाँ यह लेकर क्या करूँगा ?

उन्होंने कहा ष भगवन् । यह आप अच्छा नहीं कर रहे हैं , केवल घरवालियों की बात सुनते हैं , मेरी तरफ देखो ।

भगवान् ने कहा तेरी तरफ क्या देखूँ ? तू सारे संसार के स्वरूप को समझ कर फिर मोह के रास्ते जाना चाह रहा है तो तेरी क्या बात सुनूँ।

तब नारद जी ने समझ लिया कि भगवान् ने जो किया सो ठीक किया । नारद जी ने कहा एक बात मेरी मान लो।

आपने मेरे को तरह तरह के नाच अनादि काल से नचाये और मैंने तरह तरह के खेल आपको दिखाये।

कभी मनुष्य , कभी गाय इत्यादि पशु , कभी इन्द्र , वरुण आदि संसार में कोई ऐसा स्वरूप नहीं जो चौरासी के चक्कर में किसी न किसी समय में हर प्राणी ने नहीं भोग लिया ।

अनादि काल से यह चक्कर चल रहा है , सब तरह से आपको खेल दिखाया।

आप मेरे को ले जाते रहे और मैं खेल करता रहा ।

अगर आपको मेरा कोई खेल पसंद आगया हो तो आप राजा की जगह पर हैं और मैं ब्राह्मण हूँ तो मेरे को कुछ इनाम देना चाहिये ।

वह इनाम यही चाहता हूँ कि मेरे शोक मोह की भावना निवृत्त होकर मैं आपके परम धाम में पहुँच जाऊँ । और यदि कहो कि तूने जितने खेल किये सब बेकार है, तो भी आप राजा हैं ।

.जब कोई बार बार खराब खेल करता है तो राजा हुक्म देता है कि इसे निकाल दो।

.इसी प्रकार यदि मेरा खेल आपको पसन्द नहीं आया है तो फिर आप कहो कि इसको कभी संसार की नृत्यशाला में नहीं लाना है । तो भी मेरी मुक्ति है।

भगवान् बड़े प्रसन्न होकर तराजू से उठे और नारद जी को छाती से लगाया और कहा तेरी मुक्ति तो निश्चित है।

दीवारों, छतों पर खेती
(फार्मिंग)
★ सुन्दरता ★ प्रकृति की नजदीकी
★ ऑक्सीजन बढ़ायें ★ सब्जियां उगायें
★ किचन फार्मिंग शौक का लाभ
★ वर्टिकल गार्डन (आर्गेनिक खेती)
★ हाइड्रोपोनिक्स (पानी में खेती)
सम्पर्क: स्वामी आत्मोकामरान, मो0 9412843670
सद्भावना समिति (पंजी0), श्रीकृष्ण भवन, 283, वैस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ
sadbhawnaa.com

# बुजुर्गो का नजरिया अपनी संतान के प्रति

अक्सर देखा गया है की बुजुर्गों का अपने बच्चों के प्रति नकारात्मक नजरिया उनकी समस्याओं का कारण बनता है.वे अपनी संतान को अपने अहसानों के लिए कर्जदार मानते हैं. उनकी विचारधारा के अनुसार उन्होंने अपनी संतान को बचपन से लेकर युवावस्था तक लालन पालन करने में अनेक प्रकार के कष्टों से गुजरना पड़ा,जिसके लिए उन्हें अपने खर्चे काट कर उनकी सुविधाओं का ध्यान रखा, उनकी आवश्यकताओं के लिए अपनी क्षमता से अधिक प्रयास किये. ताकि भविष्य में ये बच्चे हमारे बुढ़ापे का सहारा बने.जब आज वे स्वयं कमाई करने लगे हैं तो उन्हें सिर्फ हमारे लिए सोचना चाहिए, हमारी सेवा करनी चाहिए. कभी कभी तो बुजुर्ग लोग संतान को जड़ खरीद गुलाम के रूप में देखते हैं।

बुजुर्ग लोग दुनिया में आ रहे सामाजिक बदलाव को अनदेखा कर युवा पीढ़ी के परंपरा विरोधी व्यव्हार से क्षुब्ध रहते हैं.उसके लिए सिर्फ और सिर्फ अपनी संतान को दोषी मानते हैं.वे उनकी तर्क पूर्ण बातों को बुजुर्गों का अपमान मानते हैं.वे युवा पीढ़ी की बदली जीवन शैली से व्यथित होते हैं.नयी जीवन शैली की आलोचना करते हैं.क्योंकि आज की युवा पीढ़ी अपने बुजुर्गों का सम्मान तो करना चाहती है या करती है परन्तु चापलूसी के विरुद्ध है. परन्तु बुजुर्ग उनके बदल रहे व्यव्हार को अपने निरादर के रूप में देखते हैं. बुजुर्गों के अनुसार उनकी संतान को परंपरागत तरीके से अपने माता पिता की सेवा करनी चाहिए ,नित्य उनके पैर दबाने चाहियें उनकी तबियत बिगड़ने पर हमारी मिजाजपुर्सी को प्राथमिकता पर रखना चाहिए. उन्हें सब काम धंधे छोड़ कर उनकी सेवा में लग जाना चाहिए और यही उनके जीवन का अंतिम लक्ष्य होना चाहिए. यही संतान का कर्तव्य होता है.उनके अनुसार संतान की व्यक्तिगत जिन्दगी, उसकी अपनी खुशियाँ, उसका अपना रोजगार, उसका अपना परिवार कोई मायेने नहीं रखता.और जब संतान उनकी अपेक्षाओं पर खरी नहीं उतरती तो वे उन्हें अहसान फरामोश ठहराते हैं।

बुजुर्गों के अनुसार आज की नयी पीढ़ी अधिक स्वच्छन्द और अनुशासन हीन हो गयी है.वह पहनावे के नाम पर अर्ध नग्न कपडे पहनती है, उसके परिधान अश्लील हो गए हैं,देर से उठना, देर से सोना ,जंक फूड खाना इत्यादि सब कुछ अप्राकृतिक हो गया है.ऐसे सभी जीवन शैली के बदलावों से पुरानी पीढ़ी खफा रहती है,आक्रोशित रहती है,और जब वे उन्हें बदल पाने में असफल रहते है तो कुंठा के शिकार होते हैं. परिवर्तन प्रकृति का नियम है इस पर किसी का बस नहीं चलता. प्रत्येक बदलाव से जहाँ कुछ सुविधाएँ जन्म लेती है तो कुछ बुराईयां (बुजुर्गों के अनुसार)भी पैदा होती हैं.और होने वाले परिवर्तनों को कोई नहीं रोक सकता। अतः नए बदलावों को स्वीकार कर ही नयी पीढ़ी से सामंजस्य बनाया जा सकता है यह स्वीकृति ही बुजुर्गों के हित में है।

कभी कभी घर के बुजुर्ग व्यक्ति अपनी संतान के मन में उनके लिए सम्मान को, अपनी मर्जी थोपने के लिए इस्तेमाल करते हैं उन्हें भावनात्मक रूप से ब्लेक मेल करते हैं.इस प्रकार से यदि कोई बुजुर्ग अपने पुत्र या पुत्रवधू को अपनी बात मनवाने के लिए दबाव बनाते हैं,जैसे उन्हें शहर से दूर कही रोजगार के लिए नहीं जाना है या विदेश नहीं जाना,(चाहे उन्हें मिला जॉब का आमंत्रण ठुकराना पड़े.) वर्ना वे उसे कभी माफ नहीं करेंगे ,या वे अनशन कर देंगे इत्यादि इत्यादि. इस प्रकार से वे अपनी संतान के भविष्य के साथ तो खिलवाड करते ही हैं, उनके मन में अपने लिए सम्मान भी कम कर देते हैं. और उपेक्षा के शिकार होने लगते हैं. अतः प्रत्येक बुजुर्ग के लिए आवश्यक है की कोई भी निर्णय लेने से पूर्व अपने हित से अधिक संतान के हित के बारे में सोचें ताकि उनके भविष्य को कोई नुकसान न हो या कम से कम हो ।

अनेक परिवारों में देखा गया है की माँ ने अपना पूरा जीवन विधवा या परित्यक्ता होकर भी अनेक कष्ट उठा कर अपने परिवार का पालन पोषण किया होता है, या फिर पिता ने बिना पत्नी के अर्थात बच्चो की माँ के अभाव में अपने बच्चों को माँ और बाप दोनों का प्यार देकर बड़ा किया होता है,परिवार में पिता की विधवा बहन रहती है जिसे पारिवारिक सुख नसीब नहीं हुआ ,ऐसे परिवारों में जब बच्चे बड़े होकर अपने जीवन साथी के साथ सुखी पारिवारिक जीवन बिताना शुरू करते हैं है तो घर के बड़ों को सहन नहीं होता वे असहज हो जाते हैं.और पुरानी बातों को याद कर परिवार के वातावरण को बोझिल बना देते हैं. कभी कभी तनाव पूर्ण स्थिति भी बन जाती है. क्योंकि वे अपने परिवार के नवयुवक को अपनी पत्नी के साथ हंसी मजाक करते देख खीज का अनुभव करते हैं.जो उनके व्यव्हार से भी स्पष्ट होता रहता है.परन्तु अपने जीवन में घटित दुर्घटनाओं से संतान को आहत करना कितना उचित है? अपनी खीज व्यक्त कर अथवा तनाव पूर्ण वातावरण दे कर किसका भला हो सकता है? ऐसा व्यव्हार शायद आपको नयी पीढ़ी से अलग थलग कर दे. इस सन्दर्भ में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाना आपके हित में होगा. बल्कि आपको खुश होना चाहिय की आप की मेहनत और तपस्या का ही तो फल है,जो आज आपके बच्चों के जीवन में खुशियाँ आ पायीं. बच्चों की खुशियाँ ,उनकी किलकारियां,आपकी ही महनत का परिणाम है. अतः उनके साथ खुश होना आपका सम्मान बढ़ाएगा .वैसे भी उनकी खुशियों के लिए ही तो आपने अपने जीवन साथी के न होते हुए भी अनेक कष्ट उठा कर उनको यहाँ तक ला पाए और बच्चे को अपने जीवन को हंसी खुशी जीने लायक बन पाए.अपने जीवन के दुखद क्षणों को भूलकर परिवार की खुशियों में अपना योगदान दें और वातावरण को प्रफुल्लित बनायें, उससे ही आपकी संतान के मन में आपके लिए श्रृद्धा भाव जागेगा. और हमेशा यही कामना करें की जैसा कष्टदायक जीवन अपने जिया है आपके बच्चों को उसकी परछाई भी न पड़े. उनके जीवन में दुनिया भर की खुशियाँ सदैव बनी रहें. वे समाज में सम्मान पूर्वक जियें और निरंतर प्रगति पथ पर आगे बढते रहें. आपका अपने बच्चों के प्रति सकारात्मक नजरिया ही परिवार को प्रफुल्लित करेगा, और आपका शेष जीवन सुखद, शांति पूर्ण, एवं सम्मानजनक व्यतीत होगा। –सत्य शील अग्रवाल, 532/6, शास्त्री नगर मेरठ

# बथुआ के फायदें

बथुआ रू जिसे हम सब फालतू समझते हैं वह कई लाइलाज रोगो का एकलौता चमत्कारी समाधान है..

बथुआ आजकल आपको खेतो में और पगडंडियों पर उगा हुआ दिख जाएगा। यह एक अति गुणकारी साग है,,सर्दियों में इसकी सब्जी हर घर मे बनती हैं, सब्जी में यदि थोड़ी से छाछ या दही मिला ले तो फिर स्वाद का आनंद ही कुछ और होता हैं,इसके पराठे भी बड़े स्वादिष्ट लगते है...

बथुवे में क्या नहीं है?? बथुवा विटामिन ठ1, ठ2, ठ3, ठ5, ठ6, ठ9 और विटामिन ब् से भरपूर है तथा बथुवे में कैल्शियम, लोहा, मैग्नीशियम, मैगनीज, फास्फोरस, पोटाशियम, सोडियम व जिंक आदि मिनरल्स हैं। 100 ग्राम कच्चे बथुवे यानि पत्तों में 7.3 ग्राम कार्बोहाइड्रेट, 4.2 ग्राम प्रोटीन व 4 ग्राम पोषक रेशे होते हैं। कुल मिलाकर 43 ज्ञबंस होती है। जब हम बीमार होते हैं तो आजकल डॉक्टर सबसे पहले विटामिन की गोली ही खाने की सलाह देते हैं.. गर्भवती महिला को खासतौर पर विटामिन बी, सी व लोहे ( प्तवद) की गोली बताई जाती है और बथुवे में वो सबकुछ है ही, कहने का मतलब है कि बथुवा पहलवानो से लेकर गर्भवती महिलाओं तक, बच्चों से लेकर बूढों तक, सबके लिए अमृत समान है....

बथुआ के साग के फायदे

1. चुस्ती लाए– पोषक तत्वों की खान बथुआ में कैल्शियम, आयरन, मैग्नीशियम आदि समस्त तत्व पाए जाते हैं। इसलिए बथुए का नियमित प्रयोग शरीर को चुस्ती–फुर्ती और ताकत प्रदान करता है।

2. हीमोग्लोबिन की कमी दूर करे– बथुआ में आयरन और फोलिक एसिड पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है। इसलिए यह हीमोग्लोबिन की कमी को दूर करने में सहायक है। बथुआ महिलाओं के मासिक धर्म की अनियमितता से राहत पाने में भी लाभप्रद है।

3. पथरी की समस्या– इसी तरह पथरी (स्टोन) की समस्या में भी बथुआ खाना लाभप्रद है। यही नहीं किडनी में इन्फेक्शनऔर किडनी में स्टोन की समस्या में भी बथुआ फायदेमंद है।

4. कब्ज की समस्या– बथुआ आमाशय को ताकत देता है, कब्ज दूर करता है, बथुए की सब्जी दस्तावर होती है, कब्ज वालों को बथुए की सब्जी नित्य खाना चाहिए।

5. पीलिया में फायदेमंद– बथुआ के साग का सेवन पीलिया के मर्ज में लाभप्रद है। बथुआ पीलिया से बचाव में भी लाभप्रद है।

6. पेट के लिए लाभप्रद– बथुआ के नियमित सेवन से हाजमा सही रहता है। यह पेट दर्द में भी लाभप्रद है।

7. जोड़ो के दर्द में लाभप्रद – बथुआ शरीर के विभिन्न जोड़ों के दर्द में लाभप्रद है। इसलिए जो लोग जोड़ों के दर्द से पीड़ित हैं, उन्हें बथुए के साग का सेवन करना चाहिए।

8. पेशाब के रोग– मूत्राशय, गुर्दा और पेशाब के रोगों में बथुए का साग लाभदायक है। पेशाब रुक–रुककर आता हो, कतरा–कतरा सा आता हो तो इसका रस पीने से पेशाब खुल कर आता है।

# विज्ञान हमें कहां से कहां ले आया !

हम तो फिर भी कहेंगे और सब कहते हैं कि विज्ञान बहुत तरक्की कर रहा है पर बीमारी घटने के बजाय बढ़ कैसे रही है ?

हर घर में कोई ना कोई दवाई क्यों खा रहा है? नहीं पता न ?

मैं बताता हूँ, हुआ ये है कि हमारे रसोई की मूलभूत चीजों में बहुत मिलावट, गिरावट और घटियापन आ गया है।

कौन कौन सी हैं वो चीजें ?

1. नमक
2. गुड़
3. तेल
4. घी
5. दूध
6. आटा
7. पानी
8. शक्कर

जी हाँ बस इन चीजों में सुधार कीजिये और 6 महीनो में फर्क देखिये।

1. सब से पहले समुंद्री नमक– आयोडीन नमक को बदल के सेंधा नमक (रॉक सॉल्ट) कर दीजिये, वो भी बड़े टुकड़े लाके घर में ही कूट लें और हाँ नमक केवल रसोई बनाते वक्त ही डालें। टेबल पे रख के भोजन के समय डालने की आदत छोड़ें।

2. गुड़ हमेशा डार्क चॉकलेट कलर का ही लायें।सफेद गुड़ में मिलावट होती है।

3. त्मपिदमक वपस के बदले घानी का फिल्टर तेल ही खायें, वो भी मुंगफली, तिल या सरसोंय कोई अन्य नहीं।

4. घी असली वो है जो देसी गाय के दूध से दहीं, दहीं से मख्खन और मख्खन से बनता है। सीधे मलाई निकाल के या विदेशी गाय के दूध से जो बनता है, वो बटर आयल है, घी नहीं।

5. दूध पिओ तो केवल देसी गाय का, नहीं तो पिओगे ही नहीं तो कोई नुकसान नहीं है।

6. आटा हमेशा मोटा पिसवाओ और बिना चोकर निकले प्रयोग में लाओ। मैदा कभी ना खायें।

7. पानी हमेशा मटके का या गुनगुना ही पीओ। ठंडा फ्रिज का पानी कभी नहीं पीना।

8. चीनी सफेद जहर है। उसकी जगह गुड़ ही खायें या शक्कर जो थोड़ी पीली होती है। बड़े टुकडों में मिलती है, उसे प्रयोग करें।

अब आप कहेंगे इतना कुछ कौन करेगा ? टाइम नहीं है, तो टेंसन नहीं लेने का, मस्त से जियो, कुछ नहीं होता है। तो दोस्तों, आस–पास के जो लोग गोलियां खा रहे हैं, वो भी ऐसा ही सोचते थे लेकिन

अब वो हॉस्पिटल में डॉक्टर के चक्कर काटने में टाइम निकाल ही रहे हैं। थोड़ा सा बदलाव और सेहत बनाओ।

# बचें साइनोसाइटिस से

साइनस हमारी नाक की हड्डियों के आसपास स्थित हवादार पॉकेट्स को कहते हैं। इनमें संक्रमण होना साइनोसाइटिस कहलाता है। ऐसे में आपकी नाक अक्सर बंद रहती है, उससे पानी आने लगता है और कभी–कभी आंखों, गालों और माथे में दर्द होता है। अक्यूट साइनोसाइटिस संक्रमण से उत्पन्न होती है और फिर इससे सर्दी हो जाती है। कभी–कभी इसमें बुखार और तेज दर्द भी होता है। यह बीमारी कुछ ही दिनों में ठीक हो सकती है मगर कभी–कभी तीन–चार सप्ताह भी लग सकते हैं। अक्यूट साइनोसाइटिस के मुकाबले क्र ॉनिक साइनोसाइटिस ज्यादा जल्दी ठीक होती है।

इसमें दर्द भी कम होता है पर इसमें भी कई बार सनसनाहट के साथ सिरदर्द और बंद नाक की शिकायत रहती है और बुखार बहुत कम होता है। साइनोसाइटिस से पीड़ित कई लोगों को यह पता ही नहीं होता है कि उन्हें यह रोग है। उन्हें यह लगता है कि उन्हें सर्दी है जो ठीक नहीं हो रही है। इसका इलाज बेहद जरूरी होता है क्योंकि कभी–कभी हालत बिगड़ जाने पर यह अस्थमा या ब्रॉन्काइटिस का रूप ले लेती है। कुछ खास केसेज में तो यह दिमाग और आंखों पर भी असर करती है। साइनोसाइटिस के लक्षण हमेशा स्पष्ट नहीं होते हैं। जिन लोगों को इसकी शिकायत रहती है, उन्हें तनाव से होने वाला सिरदर्द, एलर्जी और लगातार सर्दी या फ्लू रहता है। अक्यूट और क्र ॉनिक साइनोसाइटिस का सबसे साधारण लक्षण है नाक बंद होना।

**अक्यूट साइनोसाइटिस के लक्षण :** बुखार, पीला या हरा कफ (बलगम), आवाज भारी होना, नाक से बदबू आना और मुंह का स्वाद बिगड़ जाना, गाल, माथा और आंखों के आसपास के हिस्सों में तेज दर्द होना। इससे ही पता लगाया जा सकता है कि कौन सा साइनस प्रभावित हुआ है।

इच्छाओं और जरूरतों का समाधान
हिन्दी साप्ताहिक श्रम शिखर CITY CLASSIFIED MEERUT
www.shramshikhar.in, shramshikhar@gmail.com
MATRIMONIAL